JAMNALAL BAJAJ FOUNDATION

श्रीमती गौरा देवी

महिला उत्थान व बाल कल्याण की पुरस्कार प्राप्त कर्ता – १९८४

मैं जमनालाल बजान प्रतिष्ठान की अनुगृहीत हूँ कि उन्होंने मुझे इतनी प्रतिष्ठा दी और मुझे एवार्ड के योग्य समझा। चाहे मैं अपने आप को इस योग्य नहीं समझती क्योंकि मैंने जो सेवा की है, वह एव ार्ड को प्राप्त करने के लिये नहीं की। मैं सदैव गांधीजी की अनुयायी रही । मैं उनकी ही प्रेरणा से जीवन भर समाज सेवा में लगी रही । हमारे देश में समाज सुधार और समाज कल्याण का विशेषकर स्त्रियों और बच्चों के कल्याण का बहुत बड़ा क्षेत्र है, क्योंकि हमारा एक गरीब देश है, और जिन्हें हम पिछड़ा वर्ग समझते हैं उनमें शिक्षा का अभाव है। इसीलिये मैं समझती हूँ कि एक जीवन नहीं, कई जीवन इसमें लगाने की आवश्यकता है, ताकि हम अपने देश का उत्थान कर सकें। इस क्षेत्र के कई छोर हैं। मैंने तो केवल एक छोर पकड़ा, और गांधीजी की प्रेरणा से महिलाओं और बच्चों की सेवा की, गांधीजी की ही प्रेरणा से मेरे मन में लगन रही कि वर्ग विहीन और जातिहीन समाज बने, और हर व्यक्ति को समाज में एकसा स्थान और सम्मान मिले. इसी एक उद्देश्य के लेकर मैंने हिमाचल प्रदेश में महिलाओं के जागरण का, नारी शक्ति को बढ़ाने का, और पिछड़े वर्ग के बच्चों के विकास का बीड़ा उठाया। हिमाचल प्रदेश से शायद आप इतने परिचित ना हों, इसलिये बताना चाहती हूँ कि हमारी बस्तियाँ दुर्गम स्थान में पर्वतों के ऊँचे शिखर पर, और गहरी खड्डों में आज भी हैं। जहां आवागमन के को ई साधन न हों, पैदल चलने के रास्ते भी पगडंडी से अधिक चौड़े न हों, वह भी बर्फ से ढके हों, ऐसे स्थानों पर पहुंचना बहुत ही कठिन रहा। प्रभु की कृपा से, और गांधीजी की प्रेरणा लिये मैं ऐसे स्थानों पर पहुँची। तथा कस्तूरबा ट्रस्ट के उद्देश्य को लेकर मेरे साथ ट्रस्ट की सेविकाओं ने भी इन पिछड़ी बस्तियों में बहिनों और बच्चों के कल्याण के लिये केन्द्र खोले। यहां की कम शिक्षित बहिनों को प्रशिक्षित किया गया, ताकि वह अपनी ही भाषा में अपने ही ग्रामों में बहिनों के कल्याण कार्यों की सेवा करें।

आज हिमाचल हरा भर ा है। धन, धान्य है, बिजली है, आवागमन के साधन हैं, आना जाना तथा ग्रामीण बहिनों से सम्पर्क इतना कठिन नहीं, जितना १९५० से १९६५ तक था। आज हमारी ग्रामीण बहिनें जागृत हैं। अपने कर्तव्य तथा अधिकारों को समझने लगी हैं। ये कहने में अति शयोक्ति न होगी कि मेरी ही कु छ बच्चियों ने, जो दूर दराज सीमा से प्रशिक्षण लेने आई थीं, मुझे बताया कि गाँव में उनका रहन–सहन व उनसे व्यवहार बिलकुल ऐसा था जैसे ढोर –डंगर रहते हों। और इस प्रशिक्षिण के बाद मेरी इन बहिनों ने अपना सुधार तो किया ही, साथ ही पूर्ण ग्राम की महिलाओं के सुधार में लग गई ।

स्त्रियों को जागृत करने के अतिरिक्त मेरी रूचि बच्चों के लालन पालन में और शिक्षा में अधिक रही। उन बच्चों के लिये जिनके माता पिता सबेरे से शाम तक अपने कार्य में रत रहते, घर से बाहर रहते, अक्सर ऐसे बच्चे आवारा हो जाते, ठीक ढंग से शिक्षण न पाते और न ही उनके चरित्र का निर्माण होता।

मेरा ध्यान इन्हीं नन्हे–मुन्ने बच्चों ने आकर्षित किया और इन्हीं में काम करती रही हूँ, और आज भी कर रही हूँ। मेरा सदैव यही मत रहा है कि भविष्य की पीढ़ी जो देश की र्निमाता होगी, उनका चरित्र निर्माण ठीक ढंग से होन चाहिये। कहाँ तक मैं इस कार्य में सफल हुई हूँ, ये तो वही बता सकते है, जो बच्चे नवयुवक होकर अपने पाँव पर खड़े हैं । मेरे विचार में यदि सच्ची लगन से कोई भी व्यक्ति कल्याण क्षेत्र का, कोई भी छोर पकड़ले और लगन के साथ काम करे, तो हमारे देश का कल्याण हो सकता है।

मुझे पूर्ण विश्वास है, कि मातृ शक्ति और बच्चों का सुधार ही हमारा उद्देश्य होना चाहिये। गांधीजी ने भी और जवाहरलाल ने भी यही आवाज उठाई, क्योंकि भविष्य की उज्जवलता बच्चों पर निर्भर करती है। बच्चे बनेगें, तो देश उन्नत होगा।

आज भी यहाँ १०० बच्चे जिन में ५० लड़कियां, ५० लड़के हैं जों सी, क्षेत्र के हैं। मेरे जीवन में इस कार्य में जनता ने मेरा बड़ा साथ दिया। लाखों रुपये लोगों ने बच्चों के लालन –पालन के लिये दिये । जन सहयोग से ही मैं अपने उद्देश्य में दिनों दिन आगे बढ़ती रही।

अन्त में मैं यही कहना च ाहूँगी कि गांधीजी के बताये गये सि द्धांतों का पालन करते हुए उसका प्रचाार और प्रसार जनजन तक पहुँचायें ताकि इस देश का और इस संसार का कल्याण हो सके।